Quadrant II – Transcript and Related Materials

Programme: Bachelor of Arts (Third Year)

Subject: Hindi

Paper Code: HND 102

Paper Title: अस्मितामूलक विमर्श

Unit: 01

Module Name: अल्पसंख्यक विमर्श

Module No: 04

Name of the Presenter: Dr. Ranjita Parab

Transcript:-

- **Notes:- अल्पसंख्यक विमर्श**
- विमर्श : विमर्श का अर्थ है ,बातचीत करना सोच विचार कर तथ्य या वास्तविकता का पता लगाना तथा गुण- दोष आदि की आलोचना करना।
- विमर्श का अंग्रेजी में अर्थ होता है डिस्कोर्स और इसका अर्थ है, बोलना या भाषण देना।
- डॉ. रोहिणी अग्रवाल के अनुसार विमर्श एक जीवंत बहस है। किसी विषय को एक कोण से न देखकर विभिन्न दृष्टियों से उलट-पुलट कर देखना।
- **हिन्दी साहित्य में मुख्य विमर्श :**
- स्त्री विमर्श
- दलित विमर्श
- आदिवासी विमर्श
- किन्नर विमर्श

- किसान विमर्श

- अल्पसंख्यक विमर्श

- अल्पसंख्यक विमर्श को जानने से पहले हमें यह जानना आवश्यक है कि, अल्पसंख्यक का अर्थ क्या है ?

- अल्पसंख्यक दो शब्दों से बना है अल्प का अर्थ होता है कम और संख्या का अर्थ होता है, गणना या गिनती।

- अल्पसंख्यक समाज को जानने, समझने और परिभाषित करने की प्रक्रिया का नाम अल्पसंख्यक विमर्श है।

- अल्पसंख्यक कौन है ? उनका सम्बन्ध देश के किस भाग से है, उनकी भाषा बोली क्या है, देश के साथ उनके धर्म मजहब का क्या ताल्लुक है, उनके आचार-विचार क्या हैं ? इन सबको परिभाषित करता है, अल्पसंख्यक विमर्श।

- भारत में अल्पसंख्यक संबंधी प्रावधान संविधान में निर्दिष्ट किए गए हैं:

  १. भाषाई २. धार्मिक

- भाषाई स्तर पर अनेक जनसमुदाय अल्पसंख्यक कहे जाते हैं।

- धार्मिक स्तर अल्पसंख्यकों के अंतर्गत मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई, बौद्ध, पारसी एवं जैनों को गिना जाता है।

- इनके जीवन, जीवन संघर्ष , अस्मिता के सवाल, अस्तित्व, शोषण के संदर्भ में जहाँ बात की जाती हैं , उसे अल्पसंख्यक विमर्श कहते हैं।

- अल्पसंख्यक विमर्श के अंतर्गत मुस्लिम समाज केंद्र स्थान पर है।

- इसके अंतर्गत उनका जीवन दर्शन, उनका दृष्टिकोण, धर्म की कड़ी पाबंदिया, उनके दर्द एवं आक्रोश को बयां किया जाता हैं।

- मुस्लिम धर्म में अन्धविश्वास, कड़े कानून मुस्लिम औरतों के लिए अभिशाप साबित होते हैं। तलाक, बहुपत्नीत्व, स्त्रियों को पर्दा करने की प्रथा के कारण उनका जीवन कठिनतम बना हुआ है।

- हिन्दी साहित्य की अगर बात करें तो , आदिकाल से ही हम अल्पसंख्यक साहित्य का प्रस्थान बिन्दु मान सकते हैं, चाहें वह बौद्ध साहित्य, जैन साहित्य,सिक्ख साहित्य हो या मुस्लिम साहित्य।
- आदिकाल में सरहपा, शबरपा ,गोरखनाथ से लेकर अमीर खुसरो तक ।
- भक्तिकाल में कबीर, जायसी गुरु गोविंद के साहित्य में भी हम इस समाज से जुडी विचारधारा को देख सकते हैं।
- आधुनिक साहित्य में अल्पसंख्यक लेखकों की अगर बात की जाय तो मुख्य रूप से, राही मासूम रजा, अब्दुल बिस्मिल्लाह, अजगर वजाहत, नासिरा शर्मा, भगवानदास मोरवाल, मेहरुन्निसा परवेज़ आदि मुख्य हैं।
- इनके साहित्य में विभाजन के बाद की त्रासदी, सांप्रदायिक दंगे, इनकी संस्कृति, हिन्दू मुस्लिम संबंध आदि को आधार बनाकर साहित्य लिखा गया हैं।
- हिन्दी कहानी हो या उपन्यासों में हम इसका चित्रण देख सकते हैं, जैसे अब्दुल बिस्मिल्लाह का उपन्यास 'अपवित्र आख्यान' `कुठाँव` भगवानदस मोरवाल का 'हलाला' अनवर सुहैल कृत 'पहचान' आदि ।
- तो इस तरह से हम अल्पसंख्यक विमर्श का चित्रण साहित्य के अंतर्गत देख सकते हैं।